International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 137-140

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 137-140
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 27-03-2017
Accepted: 28-04-2017

मीना
शोधार्थी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

Correspondence
मीना
शोधार्थी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्य में छन्दोविधान विमर्श

मीना

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में काव्यों एवं महाकाव्यों की पावन परम्परा प्राचीनकाल से अविच्छिन्न रूप से प्रवहमान है। संस्कृत–जगत् में अनेक ऐसे विद्वान् हुए, जिन्होंने काव्यों एवं महाकाव्यों की रचना करके संस्कृत–साहित्य को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। कालिदास, भास, भवभूति आदि महाकाव्यों ने ऐसे–ऐसे काव्यों की रचना की, जो सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हुए। प्राचीन काल के कवियों के अतिरिक्त कुछ आधुनिक काल के भी कवि और लेखक हुए जिनकी रचना एवं ग्रन्थ संसार में विख्यात हुए, जैसे–पण्डित क्षमराव, डॉ॰ परमानन्द शास्त्री, अभिराजराजेन्द्र मिश्र, आचार्य डॉ॰ रमाकान्त शुक्ल, आचार्य प्रभुदत्त स्वामी, आचार्य चारुदत्त शास्त्री, डॉ॰ परमानन्द शास्त्री और आचार्य महावीरप्रसाद शर्मा। आचार्य महावीर प्रसाद शर्मा संस्कृत भाषा के मर्मज्ञ, साहित्यजगत् के मनीषी भाषा के उद्भट विद्वान हैं। इन्होंने अनेक महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, स्तोत्रकाव्य, चम्पूकाव्य, नाटक, लघुकथा और काव्यानुवाद आदि रचनाएं की है। 'श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्' आचार्य महावीर प्रसाद शर्मा जी द्वारा रचित एक महाकाव्य है। इस महाकाव्य में आचार्य जी ने गुरुरविदास का आदुपान्त जीवन–चरित्र, श्रम पूर्वक हरि–भक्ति, मानव एकता का सन्देश तथा आपसी–प्रेम के विषय में लिखा है। आचार्य ने यहाँ गुरु रविदास की श्रमपूर्वक हरि भक्ति को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

छन्दस् शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ

'छन्दस्' शब्द नपुसंकलिङ्ग है। 'छन्दस्' शब्द भवादिगण की आह्लादार्थक 'चदि' धातु से 'असुन्'[1] प्रत्यय तथा धातु के चकार को छकार[2] आदेश करने पर निष्पन्न होता है। इसी आधार पर कोश ग्रन्थों में 'छन्दस्' शब्द की निरुक्ति इस प्रकार उपलब्ध होती है – 'चन्दयति आह्लादयति इति छन्दः'[3] अर्थात् जो हर्ष एवं दिप्ति प्रदान करता है, वह छन्दस् है।

छन्द का महत्त्व

पाणिनीय शिक्षा में छन्द का महत्त्व बताते हुए इसे वेदपुरुष के दो पैर कहा गया है – 'छन्द पादौ तु वेदस्य'।[4] वेदों में मुख्य रूप से अथर्ववेद में गायत्री छन्द को वेदमाता कहकर दर्शाया गया है[5] वेद मन्त्रों की विशुद्धता और लयबद्ध गति के ज्ञानार्य छन्दः शास्त्र के अध्ययन का अत्यधिक महत्त्व है। सम्पूर्ण संस्कृत–साहित्य, धर्मशास्त्र, व्याकरण, कोष अलंकार, पुराण, महाभारत, रामायण, इतिहास, अर्थशास्त्र, शिल्पशास्त्र और आयुर्वेद आदि सभी छन्दोमय है।

काव्य का सामान्यतः अर्थ 'पद्य' से लिया जाता है। सम्पूर्ण पद्य साहित्य का आधार छन्द ही है। छन्द अपरिवर्तनशील होने के कारण उसकी लय, गति, यति, आदि में समय के प्रभाव से कोई परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है।

छन्दों का क्रमिक विकास

छन्दों का उद्भव वेदों से माना जाता है। प्रणव या ओंकार से छन्दोधारा प्रवाहित हुई। सर्वप्रथम वैदिक छन्दों (गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, बृहती, पंक्ति, जगती) का आविर्भाव हुआ। तत्पश्चात् लौकिक छन्दों का विकास हुआ।

लौकिक छन्दों का मूलधार वैदिक छन्द ही हैं। वैदिक छन्द पाद एवं अक्षर–संख्या के साथ ज्यों के त्यों लौकिक छन्दों में प्राथमिक रूप से स्वीकार किये गये हैं। किन्तु वहां उनको नियमानुसार वृत्तगणों में सीमाबद्ध कर दिया गया है।[6]

वृत के तीन भेद माने गए हैं समवृत, अर्धसमृत, विषमृत्त।[7] कुछ संकेतों के आधार पर छन्दों का निर्माण किया गया है।

इन संकेतों को गण, लघु, गुरु और यति इन शब्दों द्वारा दर्शाया गया है।

गण

शास्त्रानुसार तीन वर्णों के समूहों को गण कहते हैं सुवृत्ततिलक में इन गणों की संख्या आठ (यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण) वर्णित है।[8]

लघु

ह्रस्व स्वर अ, इ, उ, ऋ, लृ, या ह्रस्व स्वर से युक्त व्यंजन वर्ण यदि संयुक्त वर्ण के पूर्व में न हो तो उन्हें लघु कहा जाता है।[9]

गुरु

आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः इन स्वरों को या इन स्वरों से युक्त व्यंजन वर्णों को या इन स्वरों से युक्त अ, इ, उ, ऋ, लृ या इनसे युक्त व्यंजन वर्ण भी यदि संयुक्त वर्ण के पूर्व में हो तो उन्हें भी गुरु(ऽ) कहा जाता है। अनुस्वार युक्त वर्ण विकल्प से गुरु(ऽ) और लघु(।) होता है।[10]

यतिः पद्य पढ़ते समय छन्द के अनुसार जहां विराम होता है, वहां यति होती है। विच्छेद, विराम, विरति आदि इसके नामान्तर है।[11]

श्रीगुरुरविदासविजयमहाकाव्य में प्रयुक्त छन्द :

अनुष्टुप्

आठ वर्णों के चरणों से युक्त प्रस्तुत वृत्त को श्लोक भी कहा जाता है। वृत्तरत्नाकर में इसे ही वक्त्रसंज्ञा से अभिहित किया गया है।[12] आठ अक्षरों के चरणों से युक्त होने के कारण ही इसे अनुष्टुप् कहा जाता है। अनुष्टुप् छन्द का सर्वसम्मत लक्षण इस प्रकार है –

'श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेय सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययो।।'[13]

अर्थात् श्लोक के चारों चरणों में पंचम वर्ण लघु और षष्ठ वर्ण दीर्घ होता है तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में सप्तम वर्ण लघु होता है और प्रथम तथा तृतीय चरण में यही सप्तम वर्ग दीर्घ होता है। यह छन्द प्रस्तुत महाकाव्य में भिन्न–भिन्न स्थानों पर विद्यमान है। श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्य में अधिकांश इसी छन्द का प्रयोग हुआ है। जिसका उदाहरण इस प्रकार है –

5 67
। ऽ ऽ
'जन्मना कोऽपि लोकेऽत्र
।ऽ ।
नोचो नैव प्रजायते ।
।ऽ ऽ
कुकर्म – कर्दमस्पृष्टो
। ऽ ।
नीचः सर्वोऽपि जायते ।।'[14]

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में षष्ठ वर्ण दीर्घ है और पंचम वर्ण चारों चरणों में ह्रस्व है। दूसरे और चौथे चरणों में सप्तम ह्रस्व है तथा प्रथम और तृतीय चरण में सप्तम दीर्घ है। अतः यहां अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है। आचार्य जी अनुष्टुप् छन्द में सिद्धहस्त हैं। प्रस्तुत महाकाव्य के समस्त सर्गों में यह छन्द दृष्टिगोचर होता है।

इन्द्रवज्रा

इन्द्रवज्रा संज्ञक एकादशक्षरीय समवृत्त का लक्षण इस प्रकार 'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः'[15] अर्थात् इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु होते हैं। दूसरे शब्दों में इसके प्रत्येक चरण का तीसरा, छठा, सांतवा और नवमां वर्ण ह्रस्व होता है।[16] तथा शेष सभी अर्थात् पहला, दूसरा, चौथा, पांचवा, आठवां, दसवां तथा ग्यारहवां वर्ण दीर्घ होता है। प्रस्तुत महाकाव्य में भी इन्द्रवज्रा छन्द प्रयुक्त हुआ हैं। जिसका उदाहरण यह है –

तगण तगण जगण दो गुरु
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ। ऽ ऽ
'लोनां समुद्वाह्य समानयत् सः
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ ।ऽ ऽ
गेहं निजं लोल सुकेशपाशाम् ।
ऽ ऽ। ऽ ऽ । । ऽ। ऽ ऽ
मुग्धाननां राजत भूषणाढ्यां
ऽ ऽ । ऽ ऽ ।ऽ। ऽ ऽ
तन्वीं सुतेत्रां स्मितपूर्वभाषाम् ।।'[17]

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण विद्यमान हैं। अतः यहां इन्द्रवज्रा छन्द घटित हुआ है।

उपेन्द्रवज्रा

उपेन्द्रवज्रा संज्ञक एकादशक्षरीय समवृत का लक्षण इस प्रकार है 'उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततौ गो'।[18] अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण फिर एक जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं। दूसरे शब्दों में इसके प्रत्येक चरण का पहला, तीसरा, छटा, सातवां और नवां वर्ण ह्रस्व होता है तथा शेष सभी अर्थात् दूसरा, चौथा, पांचवा, आठवां, दसवां तथा ग्यारहवां वर्ण दीर्घ होता है। प्रस्तुत महाकाव्य में इसका उदाहरण इस प्रकार है –

जगण तगण जगण दो गुरु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ ।ऽऽ
'प्रतीक्षते यं सुचि रं धरेयं
। ऽ। ऽ ऽ । ।ऽ । ऽ ऽ
प्रतीक्षते यं गगनं सतृष्णम् ।
। ऽ। ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ
प्रतीक्षते मानवता तथार्त्ता
। ऽ ।ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
युगान्तरै स्तस्य समुद्भवः स्यात् ।।'[19]

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण फिर एक जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण विद्यमान है। अतः यहां उपेन्द्रवज्रा वृत्त घटित हुआ है।

उपजाति

इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा का अन्योन्यपादोन्मीलन उपजाति कहलाता है। सामान्यतः एक जाति के दो वृत्तों के मेल को उपजाति कहते हैं।[20] छन्दोऽनुशासन में किसी भी दो जाति के छन्दों के मेल को उपजाति कहा गया है।[21] अतः यह चौदह प्रकार का होता है। परन्तु उपजाति के सन्दर्भ में बहुचर्चित तथ्य यही है कि इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा का मेल ही उपजाति है। इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं[22] तथा उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण फिर एक जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं।[23] इस प्रकार कुछ चरण इन्द्रवज्रा और कुछ उपेन्द्रवज्रा को लेकर जिस छन्द को निर्मित किया जाता है, वह उपजाति संज्ञक एकादशाक्षरीय चरण–सम्पन्न छन्द होता है। इसका उदाहरण इस प्रकार है –

जगण तगण जगण दो गुरु
। ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ
'असंहताः ये मनसापि भिन्नाः
ऽ ऽ । ।ऽ । । ऽ। ऽ ऽ

जात्यादि भदैश्च पुनर्विभिन्नाः ।
ऽ ऽ । ऽ ऽ । ।ऽ । ऽ ऽ
अस्पृश्यता दोष विदूषिताश्च
। ऽ ।ऽ ऽ ।। ऽ ।ऽ ऽ
जनाः पराधीनतया व्यसीदन् ।।'[24]

प्रस्तुत श्लोक के प्रथम पाद में एक जगण, एक तगण फिर एक जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण हैं और दूसरे चरण में दो तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण वर्ण विद्यमान है। यहां इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा का संयोग होने के कारण उपजाति छन्द घटित होता है।

वसन्ततिलकम्

'ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजा जगौगः।'[25] अर्थात् वृत्त के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण दो जगण और अन्त में दो वर्ण गुरु होते हैं उस चौदहवर्णीय चरण सम्पन्न समवृत्त को वसन्ततिलक कहते हैं। प्रस्तुत महाकाव्य में यह छन्द इस प्रकार हैः–

तगण भगण जगण जगण दो गुरु
ऽ ऽ ।ऽ । ।। ऽ । ।ऽ । ऽऽ
'एवं विरच्य सुपदानि बहूनि विज्ञः
ऽ ऽ । ऽ ।।। ऽ ।। ऽ । ऽऽ
नित्यं समागतजनान् समुपादिदेश ।
ऽ ऽ । ऽ। ।। ऽ।। ऽ ।ऽ ऽ
कुण्ठा विहाय जड़तामथ भारतीयाः
ऽ ऽ । ऽ। । ।ऽ ।। ऽ।ऽऽ
येनात्मगौर वपथा प्रसरेयुरग्रे ।।'[26]

प्रस्तुत पद्य के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण विद्यमान हैं। इस प्रकार यह चौदह वर्षीय चरण सम्पन्न समवृत्त है। अतः इसे वसन्ततिलक छन्द कहेंगे।

मालिनी

'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलौकेः'[27] अर्थात् जिस वृत्त के प्रत्येक चरण में दो नगण, एक मगण तथा दो यगण होते हैं और आठवें तथा सातवें अक्षर के बाद यति होती है उस पन्द्रहवर्णीय चरण सम्पन्न समवृत्त को मालिनी कहते हैं। प्रस्तुत महाकाव्य में यह छन्द इस प्रकार हैं :–

नगण नगण मगण यगण यगण
। ।।। । ।ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ। ऽऽ
'गुरुवर रविदासः सस्मितं प्राह विप्रं
। ।। ।। । ऽऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽऽ
न खलुं मयि विशेषः वस्तुतः कोऽपि विप्र ।
। ।। ।। । ऽ ऽ ऽ ।ऽऽ । ऽ ऽ
मनसि भवति बन्धो मुक्तिरत्रैव दृष्टा
। ।। । ।। ऽऽ ऽ ।ऽ ऽ । ऽऽ
मनसिं तु परिशुद्धे काष्ठपात्रेऽपि गंगा ।।'[28]

प्रस्तुत पद्य के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण, एक मगण, तथा दो यगण वर्ण विद्यमान है और आठ तथा सात वर्णों पर यति भी है, अतः यह मालिनी छन्द का स्पष्ट उदाहरण है।

भुजगंप्रयात :

'भुजगंप्रयात भवेद्यैश्चतुर्भि'[28] अर्थात् जिस पद्य के प्रत्येक चरण में चार यगण (।ऽऽ) एवं द्वादश वर्ण होते हैं तथा जिसके पादान्त में यति होती है उसे भुजगंप्रयात समवृत्त कहते हैं। प्रस्तुत महाकाव्य में इसका उदाहरण इस प्रकार है –

यगण यगण यगण यगण
। ऽ ऽ। ऽऽ ।ऽ ऽ । ऽ ऽ
'पराधीन देशे करालेऽयकाले
।ऽ ऽ । ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽ ऽ
महाभीषणे प्रसृते जातिजाले ।
।ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ
महाकल्मषै राचिते देश भाले
।ऽ ऽ ।ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
बशूवायमेकः शुभाशः प्रकाशः ।।'[30]

प्रस्तुत चरण के प्रत्येक चरण में क्रमशः चार यगण है और पादान्त में यति भी है अतः यहां भुजगंप्रयात वृत्त का लक्षण घटित होता है।

शार्दूलविक्रीडित

शार्दूलविक्रीडित एक ऐसा समवृत्त है, जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस वर्ण होते हैं। छन्दोमञ्जरी के अनुसार शार्दूलविक्रीडित का लक्षण इस प्रकार है :

'सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्'[31]

अर्थात् शार्दूलविक्रीडित के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक मगण, एक सगण, एक जगण तथा फिर एक सगण तथा दो तगण तथा अन्त में एक गुरु वर्ण होता है और बारह तथा सात वर्णों पर यति होती है। प्रस्तुत महाकाव्य में छन्द का उदाहरण इस प्रकार है :

मगण सगण जगण सगण तगण तगण एक गुरु
ऽ ऽऽ ।। ऽ । ऽ।।। ऽ ऽ ऽ ।ऽ ऽ ।ऽ
'रामानन्दगुरोः सुगौरवयुतश् शिष्यः परो भक्तिमान्
ऽ ऽ ऽ । ।ऽ ।ऽ । ।। ऽ ऽ ऽ ।ऽ ऽ ।ऽ
आत्मानन्द परायणः सुविमलः कर्त्तव्यसारोज्ज्वलः ।
ऽ ऽ ऽ । ।ऽ । ऽ । ।। ऽ ऽऽ ।ऽ ऽ ।ऽ
सिद्धः सिद्धियुतोऽपि सौम्य सरलो नम्रो गताहंकृतिः
ऽ ऽ ऽ ।। ऽ। ऽ। । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ।ऽ
धन्योऽसौ रविदासनामक गुरुर् देवः पृथिव्यां स्थितः ।।'[32]

उपर्युक्त श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, एक सगण, एक तगण, तथा फिर एक सगण और दो तगण तथा अन्त में एक गुरु वर्ण विद्यमान है। अतः शार्दूलविक्रीडित छन्द स्पष्ट है।

शिखरिणी

समवृत्तों का सत्रहवां भेद शिखरिणी एक ऐसा छन्द है, जिसके सप्तदशाक्षरीय प्रत्येक चरण में क्रमशः एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण और एक लघु तथा एक गुरु वर्ण का प्रयोग होता है। शिखरिणी छन्द की इस प्रकार की व्यवस्था में क्रमशः प्रथम, सप्तम से एकादश पर्यन्त तथा चतुर्दश से षोडश वर्ण ह्रस्व हो जाते हैं। शिखरिणी के प्रत्येक चरण में नव और ग्यारह पर यति होती है, जैसा कि वृत्तरत्नाकर में शिखरिणी के लक्षण से स्पष्ट है।

'रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ।'[33]

प्रस्तुत महाकाव्य में इसका उदाहरण इस प्रकार है –

यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु
। ऽऽ ऽ ऽ ऽ ।। ।। ।ऽ ऽ । । । ऽ
'सुगात व्यं नव्यं चरितमतिभव्यं रवि गुरोः
। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ।।।। ऽ ऽ । । ।ऽ
सदाधार्य्यं कार्यं गुरुवचनमार्यं सुधिजनैः ।
।ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ।।। ऽ ऽ ।। । ऽ
समे पापाश्शापाः त्रिविधभवतापाः विगलिताः

।ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ।। । ऽ ऽ ।। ।ऽ
भवन्त्यस्मिन् काव्ये गुणिजन वि भाव्ये सुपठिते ।।'[34]

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण और एक लघु तथा गुरु वर्ण का प्रयोग हुआ है। अतः यहां शिखरिणी छन्द घटित है।

छन्दोविधान न्यूनताएँ

श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्य में कुल 643 पद्य हैं इनमें 9 छन्दों का प्रयोग आचार्य जी ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया है। इन पद्यों के चरणों में कवि ने उस वैकल्पिक विधान का आश्रय लिया है, जिसके अनुसार पदान्त में लघु वर्ण को छन्दपूर्ति हेतु दीर्घ मान लिया जाता है। वस्तुतः यह अवस्था केवल विशेष परिस्थिति में ही शास्त्रानुमोदित है। अतः इस नियम का अत्यधिक प्रयोग छन्दोविधान में कवि की स्वल्प न्यूनता की ओर संकेत है, जो विचारणीय है। कवि ने महाकाव्य के प्रथम सर्ग के 40, द्वितीय सर्ग के 68, 80, 98, तृतीय सर्ग के 143, 173, 174, अष्टम सर्ग के 483, 487, 494, 499, 513, 524, एकादश सर्ग के 543, 544, 569 और द्वादश सर्ग के 588, 596, 622 वें पद्य में अनुष्टुप छन्द के प्रयोग में पंचम वर्ग के ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ तथा षष्ठ वर्ण के दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व और वर्णों की अधिकता का प्रयोग किया गया है परन्तु कालिदास की इस उक्ति 'एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः 'किरणेष्विवाः'[35] से इस प्रकार के दोष कवि की काव्य प्रतिभा में बाधक नहीं होते हैं। अतः फिर भी छन्दोविधान की दृष्टि से यह कवि की न्यूनता में परिगणित किया जा सकता है, जो विचारणीय है।

आचार्य महावीर प्रसाद शर्मा जी द्वारा विरचित 'श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्' पुस्तक का अध्ययन करने के बाद ज्ञात होता है कि आचार्य जी उच्च कोटि के कवि एवं लेखक हैं। इनकी रचनाओं में 'श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्' रचना का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिसमें किसी ऐसे भारतीय संत का चित्रण किया गया है, जिसके सामने सभी एक हैं किसी में भी जातिगत भेद–भावना नहीं है। आचार्य जी ने काव्य परम्परा का निर्वाह करते हुए प्रत्येक सर्ग के अन्त में छन्द परिवर्तन किया है। प्रस्तुत महाकाव्य में अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, मालिनी भुजगंप्रयात, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित तथा शिखरिणी छन्द घटित होते हैं। अनुष्टुप् छन्द का अधिकांशतः प्रयोग हुआ है। कहीं–कहीं विषय वृत्त उपजाति का भी प्रयोग हुआ है। छन्द योजना में कवि का अनुपम कौशल लक्षित होता है।

संदर्भ

1. पा॰ धा॰ पा॰ भवादिगण, पृ॰ 2
2. उणादिसूत्र, 4.218, सू॰ सं॰ 658
3. श॰ क॰, भाग–2, पृ॰ 461
4. पाणिनीय शिक्षा, कारिका, 90
5. स्तुतामया वरदा वेदमाता च चोदयन्तां पावमानी द्विजनाम् । अथर्ववेद, 19.7.1
6. छन्दशास्त्र, 4.9
7. वृत्तरत्नाकार, 1.13
8. सुवृत्ततिलक, 1.7–8
9. छन्दोमञ्जरी, 1.11
10. वही, 1.12
11. यतिर्जिह्वेष्टविश्रामस्थानं कविभिरूच्यते ।
सा विच्छेदविरामधि पदैर्वाच्चा निजेच्छा ।। वही, 1.12
12. श्रुतबोध (वृत्तप्रकरण) श्लोक–4
13. वृत्तरत्नाकर, 2.21
14. श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्, 10.490
15. छन्दोमञ्जरी, 2.41
16. श्रुतबोध (वृत्तप्रकरण), श्लोक–14
17. श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्य, 5.222
18. छन्दोमंजरी, 2.42
19. श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्, 4.179
20. वृत्तरत्नाकर, 3.30
21. छन्दोऽनुशासन, 2.156
22. स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः । छन्दोमञ्जरी, 2.41
23. उपेन्द्रगवज्रा जतजास्ततौ गो । वृत्त, 3.29
24. श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्, 4.199
25. वृत्तरत्नाकर, 3.79
26. श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्, 9.465
27. छ॰, द्वि॰ स्वतक, 6.2
28. श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्, 7.347
29. वृत्त॰, 3.55
30. श्रीगुरुरविदासविजय, 12.625
31. छन्दोमञ्जरी, 2.198
32. श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्, 3.177
33. वृत्त॰, 3.93
34. श्रीगुरुरविदासविजय महाकाव्यम्, 12.626
35. कुमार सम्भव, 1.2